E Content for the Student of Patliputra University

Subject - Political Science

class - (B.A. Hons), Part-II, Paper IV.

Topic - Basic Features of Indian Foreign Policy

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Prof. Pol. Sc.
R.R.S. College, Mokama

प्रत्येक राष्ट्र अपनी आवश्यकता एवं परिस्थिति तथा ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठ भूमि के आधार पर अपनी विदेश नीति का निर्धारण करता है। विदेश नीति का मुख्य आधारभूत तत्व है राष्ट्र की सुरक्षा एवं विकास। भारत भी स्वतंत्रता के बाद अपनी विदेश नीति का निर्धारण किया। समय-समय पर आवश्यकतानुसार इसमें परिवर्तन भी किये गये। स्वतंत्रता के पूर्व से ही भारतीय विदेश नीति के निर्धारण पर विचार विमर्श होते रहते थे। उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता संग्राम के काल में ही कांग्रेस एक विदेशनीति विभाग बनाकर वैदेशिक घटनाक्रम पर नजर रखती थी तथा विचार प्रकट करती थी। भारत को स्वतंत्रता ब्रिटिश भारत के उत्तराधिकारी राज्य के रूप में मिली। इसके फलस्वरूप भारत को उन सभी संस्थाओं एवं संस्थों की सदस्यता स्वतः मिल गई जिसमें ब्रिटिश भारत की सदस्यता थी। इस कारण भारत को अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों, संधियों, समझौतों के पालन का दायित्व भी मिल गया। इसलिए स्वतंत्र भारत को प्रारंभ में ही बहुत बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच प्राप्त हो गया। इसका अर्थ यह नहीं कि भारत विदेशनीति के संदर्भ में ब्रिटेन को अनुकरण करने के लिए बाध्य था। भारत अपनी स्वतंत्र विदेश नीति के आधार पर अपनी नीति का निर्धारण किया। उदाहरणार्थ

भारत राष्ट्रमंडल की सदस्यता पुराने प्रावधान में संशोधन करते हुए अपनी शर्तें पर लिया। ब्रिटेन की सैनिक गठबंधन में शामिल होने की नीति को भारत ने नकार दिया तथा गुटनिरपेक्षता की नीति की घोषणा की।

भारतीय विदेश नीति के मूलभूत विशेषताओं का वर्णन निम्न रूप में किया जा सकता है —

(1) संवैधानिक आधार — भारत ने अपनी विदेश नीति के निर्धारक तत्वों का उल्लेख अपने संविधान में किया है। संविधान के नीति निदेशक तत्व के भाग की धारा 51 में विदेश नीति से संबंधित प्रावधान का उल्लेख है।

(2) विश्व शांति तथा मानवता की रक्षा — भारत की विदेश नीति विश्व शांति तथा मानवता की रक्षा के पक्षधर का है। इसके लिए भारत अपना प्रयास करता रहेगा। नेहरू ने 1949 में अमेरिका में घोषणा की थी कि जहाँ शांति पर खतरा हो, मानवता पर हस्तक्षेप हो, लोकतंत्र को कमजोर किया जा रहा हो वहाँ हम न तटस्थ रह सकते हैं और न रहेंगे।

(3) गुटनिरपेक्षता की नीति — भारतीय स्वतंत्रता काल में द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो चुका था। अमेरिका और सोवियत संघ के नेतृत्व में विश्व दो गुटों में विभाजित था। इनके बीच शीतयुद्ध था। इनके कई सैन्य संगठन थे। परिस्थिति तृतीय विश्वयुद्ध के आमंत्रण की थी। इस परिस्थिति में भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति की अवधारणा दी। यह नीति राष्ट्र की स्वतंत्र नीति का पर्याय है। फलस्वरूप विश्व के अधिकांश विकासशील तथा अर्द्धविकसित देश इस आंदोलन से जुड़ गये। समय के साथ इस नीति में उदासीनता आई है। किंतु अब भी यह नीति भारतीय विदेश नीति का आधार है।

4. साम्राज्यवाद का विरोध - भारत साम्राज्यवाद द्वारा किये जाने वाले दर्द को अच्छी तरह समझता है। इसलिए इसने साम्राज्यवाद के विरोध तथा नवोदित राष्ट्रों के आंदोलनों के समर्थन की नीति अपनाई। अफ्रीका, लैटिन अमेरिका के कई देश भारत को अपना नेता मानते हैं। वियतनाम, बंगलादेश, फीलिपिंस, इन्डोनेशिया आदि देशों में आंदोलन स्वतंत्रता आंदोलनकारियों का प्रत्यक्ष समर्थन रहा।

5. अन्तर्राष्ट्रीय कानून एवं संस्थाओं का सम्मान - भारतीय विदेशनीति का मूलभूत तत्व अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों एवं संस्थाओं के सम्मान का रहा है। भारत U.N.O. एवं उसकी एजेन्सियों, का सदस्य है। सबों के अपने आर्थिक सहायता का हिस्सा देता रहता है। U.N.O. की शांति सेना में अपनी सेना भेजता है। संधि एवं समझौतों का पालन करता है। विश्व व्यापार संगठन, पर्यावरण संरक्षण, वैश्विक महामारी आदि की स्थिति में अपना बहुमूल्य सुझाव तथा दायित्वों के निर्वाह से नहीं मुकरता है।

6. पड़ोसी राष्ट्रों से मित्रवत व्यवहार - भारत अपने पड़ोसी राष्ट्रों से मित्रवत व्यवहार का समर्थक रहा है। गुजराल की LOOK East Policy, राजीव गाँधी का SAARC तथा वाजपेयी का विचार कि "दोस्त बदले जा सकते हैं पड़ोसी नहीं" इसी नीति को इंगित करता है। किन्तु वर्तमान में चीन के बहकावे पर भारत के पड़ोसी भारत विरोधी नीति अपना रहे हैं। यह चिंता का विषय है।

7 आणविक नीति में संयम - भारत आणविक नीति में संयम की नीति का समर्थक रहा है। यह सच है कि भारत परमाणु निरोध संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया है तथा दो-दो बार

परमाणु परीक्षण कर चुका है। भारत का कहना है कि जबतक विश्व के सभी देश परमाणु बम बनाना बंद नहीं करते तबतक भारत भी इस दिशा पर हस्ताक्षर नहीं करेगा। भारत शांति एवं विकासात्मक कार्यों के लिए परमाणु परीक्षण करेगा। वर्तमान में भारत ने स्पष्ट घोषणा कर दी है कि वह पहले परमाणु शक्ति का उपयोग नहीं करेगा। इस प्रकार भारतीय आणविक नीति संयम की नीति है।

8. लोकतांत्रिक प्रक्रिया – भारत अपनी विदेश नीति एवं संधियों के क्रियान्वयन के लिए लोकतांत्रिक प्रक्रिया का पालन करता है अर्थात वे संसद से पारित किये जाते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारत एक सक्रिय विदेश नीति, स्वतंत्र विदेश नीति तथा अन्तर्राष्ट्रीय मानकों पर खरा उतरने वाले विदेश नीति का पालन करता है। यही कारण है कि भारत को एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में विश्व समुदाय मान्यता देता है। विभिन्न मंचों पर इसके विचारों को ध्यान से सुना जाता है।